IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 4, April 2023
Impact Factor: 7.301

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना का तुलनात्मक अध्ययन (झाँसी जिले के विशेष सन्दर्भ में)

अरविन्द कुमार आर्य (शोधार्थी)
डॉ., विभा चौहान, (शोध निर्देशिका)
सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग
जे. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद

सारांश: शिक्षा, हमारे चिन्तन को विवेक सम्मत् बनाती है, जिससे हमें समाज को, कुरीति और अन्याय से मुक्त कराने की प्रेरणा मिलती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो पाना सम्भव है। शिक्षा ही आम व्यक्ति को समाज में अलग एक विशिष्ट स्थान दिलानें में सार्मथ्य रखती है तथा मानव व्यवहार परिष्कृत करती है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को परिपक्त बनाना है। शिक्षा केवल वह नहीं जो छात्रों को स्कुल एवं विद्यालय में दी जाती है, अपितु शिक्षा व्यापक अर्थो में जीवन पर्यन्त चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो विभिन्न वर्ग और श्रेणी के लोगों के आपसी विचार–विमर्श के द्वारा चलती रहती है। शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें बालक में निहित आंतरिक क्षमताओं का विकास समग्र रूप से करने के साथ ही व्यैक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक नैतिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों के उत्तरदायित्व के निर्वाहन हेतु तैयार किया जाता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक के ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है जो वातावरण एवं मूल्यों के संरक्षण के साथ अनुकूल परिवेश के निर्माण तथा उत्तरदायित्व निभाने के लिये समर्थ बनाने में भी सहायक सिद्ध हो।)

शब्द कुंजी : माध्यमिक स्तर, छात्र एवं छात्रायें, पारिवारिक उत्तरदायित्व

1. प्रस्तावना

सन् 1947 में जब, भारत स्वतंत्र हुआ तो शिक्षा के इस महत्वपूर्ण स्तर के लिये उद्देश्यों के पुर्ननिर्माण की आवश्यकता हुई, क्योंकि स्वतंत्र भारत में नये समाज का निर्माण करना था तथा नई परिस्थितियों के अनुकूल बालकों का विकास कर इनमें पारिवारिक, सामाजिक तथा नैतिक उत्तरदायित्व के निर्वाहन की भावना को विकसित करना था। माध्यमिक शिक्षा के सुधार हेतु आवश्यक सुझाव देने के लिये माध्यमिक शिक्षा अर्थात मुदालियर आयोग का गठन किया गया। आयोग ने अपने प्रतिवेदन में माध्यमिक शिक्षा के लिये बड़े स्पष्ट तथा महत्वपूर्ण उद्देश्य निर्धारित किये। आयोग ने निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया –

1. जनतन्त्रात्मक नागरिकता का विकास करना
2. व्यावसायिक दक्षता का विकास करना
3. व्यक्तित्व का विकास करना
4. नेतृत्व का विकास करना

इस प्रकार मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों का पहली बार स्पष्टीकरण किया। इस आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के उपरान्त कोठारी शिक्षा आयोग ने देश तथा समाज की परिवर्तित परिस्थितियों को ध्यान में रखकर सन् 1964–65 में एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस प्रतिवेदन में आयोग ने लिखा कि वर्तमान समय में देश सामने, उत्पादन क्षमता वृद्धि, राष्ट्रीय एकता का विकास, राजनैतिक चेतना का विकास तथा सामाजिक नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के निर्माण से सम्बन्धित चार मुख्य आवश्यकतायें है। उपर्युक्त आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही आयोग ने शिक्षा उद्देश्य निर्धारित किये कि उसे बालकों की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करनी चाहिये। उनमें राष्ट्रीय एकता तथा राजनैतिक चेतना का विकास करना चाहिये और वांछनीय सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का निर्माण करना चाहिये।

हमारा देश अत्याधिक प्राचीन संस्कृति वाला देश है, जिसमें हमेशा ही मनुष्य के जीवन में नैतिकता व चरित्र को प्रधानता दी गयी है, और सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र रहे हैं, किंतु भौतिक जीवन को भी पर्याप्त महत्व दिया गया और गुरूकुलों में नैतिक, अध्यात्मिक शिक्षा के साथ ही भौतिक जीवन से जुड़े क्रियाकलापों व व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करके मानव समाज अपने मूल्यों को सुरक्षित रख

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 4, April 2023
Impact Factor: 7.301

सकता है और आगे बढ सकता है। तभी तो विद्वान कहते हैं कि मनुष्य अच्छे गुणों का जितना अधिक संगठन करता है उतना ही अधिक वह अपने चरित्र की अभिव्यक्ति करता है। आज के विद्यार्थी ही राष्ट्र एवं समाज के भावी कर्णधार व देश का भविष्य है, अतः यदि हमारे विद्यार्थी अपने जीवन में उच्च नैतिक व मानवीय मूल्यों को आत्मसात् करेंगें तो भविष्य में आदर्श व नैतिक मानवीय समाज की कल्पना साकार हो सकेगीं।

मारिस हर्ले ने उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में कहा है कि – 'उत्तरदायित्व वह कर्त्तव्य है जिसे पूरा करने के लिये एक व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुरूप कार्य करने के लिये बाध्य होता है, इस प्रकार के उत्तरदायित्व में प्रारम्भिक रूप से भारार्पित करने वा ले व्यक्ति के निर्देशों का पालन करना सन्निहित है।'

कुण्ट्ज ओडोनेल ने कहा है कि – 'उत्तरदायित्व किसी व्यक्ति का वह आबन्धन है जिसे कोई निष्पादन के लिये सौंपा गया है।'

परिवार सामाजिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है, जिसका व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक महत्व है। परिवार सामाजिक संगठन की एक सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक निर्माण इकाई तथा मानव समाज की प्राचीनतमत एवं आधारभूत इकाई है। परिवार के द्वारा ही सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण होता है। परिवार का आकार सीमित है लेकिन सदस्यों का उत्तरदायित्व असीमित होता है। अन्य संगठन कृत्रिम है इसलिये उनके सदस्यों की जिम्मेदारी सीमित है जबकि प्राथमिक समूह होने के नाते परिवार में सदस्यों की जिम्मेदारी, कार्य और उत्तरदायित्व बढ़ जाते है। परिवारे में प्रत्येक में प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक कार्य अपना समझकर करना आवश्यक है। सेवा का सबसे समीपवर्ती और सबसे सरल कार्यक्षेत्र हमारा परिवार ही है। ईश्वर ने जिन प्राणियों के साथ रक्त–सम्बन्ध बना कर तथा कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व के बन्धनों में बांधकर परिवार रूप में प्रस्तुत किया है, उनकी सेवा करना प्रत्येक दृष्टि से आवश्यक है। पारिवारिक उत्तरदायित्व के अभाव में मनुष्य का व्यक्तित्व गिरा हुआ ही बना रहता है। वह भले ही धन, विद्या, स्वास्थ्य, सौन्दर्य और प्रतिभा की दृष्टि से कितना ही बढ़ा–चढ़ा क्यों न हो, प्रायः निकृष्ट प्रकार का जीवन ही व्यतीत करेगा। दुर्गुणी व्यक्ति समाज, अपने लिये और परिवार के लिये अभिशाप ही सिद्ध होते है, इसलिये परिवार में सदगुणों की सुसंस्कारिता की अभिवृद्धि के लिये पारिवारिक उत्तरदायित की जवाबदेही एक आवश्यक धर्म कर्त्तव्य माना गया है।

विद्यालयों में शिक्षकों के द्वारा छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम ही पढ़ाया जाता है पर उनके चरित्र शिक्षण के लिये परिवार की जिम्मेदारी अधिक है, क्योंकि चरित्र कहने–सुनने से नहीं सीखा जाता, उसके लिये वातावरण एवं अनुकरणीय उदाहरण का होना जरूरी है। अच्छाई के लिये अनुकरण की प्रेरणा देने वाले आदर्शो की आवश्यकता होती है। अभ्यास में अच्छाईयाँ तब आती है जब प्रभावित करने के लिये वैसा वातावरण भी प्रस्तुत किया जाये। इस की व्यवस्था घर–परिवार में रहे तो ही यह सम्भव है कि परिवार के सदस्य पारिवारिक उत्तरदायित्व को समझे और महसूस करे। इसके लिये केवल मौखिक उपदेश ही पर्याप्त नहीं होते वरन् यह प्रयत्न भी आवश्यक है कि घर के अन्य सदस्यों का सहयोग प्राप्त कर उत्तरदायित्व को व्यावहारिक रूप दिया जाये।

परिवार अपने आकार में तो सीमित होता है लेकिन इसमें सदस्यों का उत्तरदायित्व असीमित होता है, जबकि अन्य संगठन कृत्रिम होते है, इसलिये परिवार में रहने वाले सदस्यों की जिम्मेदारी बढ़ी हुई जबकि अन्य संगठनों के सदस्यों की जिम्मेदारी सीमित होती है। प्राथमिक समूह होने के नात परिवार की जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व के कार्य बढ़ जाते है। परिवार में व्यक्ति हो प्रत्येक कार्य को अपना समझकर करना पड़ता है।

वर्तमान समय में बच्चों के सामाजिक विकास में कई तरह के विकार आ रहे है। यह विकास बालक की नैतिकता को भी प्रभावित कर रहा है। किशोरावस्था में बालक–बालिकाओं में अनेक प्रकार की अभिप्रेरणाओं के मध्य संघर्ष उत्पन्न होने लगता है। वे इस उम्र में सवच्छन्दता, आत्मनिर्भरता एवं प्रौढ़ो के जीवन के समान जीवन जीने की आकांक्षा रखते है तो दूसरी ओर माता–पिता से संरक्षण भी प्राप्त करना चाहते है। कुछ स्थितियों में वे द्वन्द्व की स्थिति में पहुंच जाते है जहां वे स्वयं के द्वारा पारिवारिक उत्तरदायित्व को निभाने में कोताही बरतने लगते है। इस आयु में वे सशक्त, सांवेगित तथा स्वतः स्फूर्त तो होते है पर विवेक से नहीं, वे स्वयं किसी कार्य के लिये सहज रूप से तत्पर होते है लेकिन विवश किये जाने पर कुछ नहीं करते है। सतर्कता की कमी तथा परिणामों की परवाह किये बिना इनका तारूण्य अपने लिये स्वयं मार्ग बनाता हुआ अग्रसर होता है।

आज के समय में बच्चों में सहन शक्ति का अभाव हो रहा है और इसी कारण से उनके नैतिक मूल्यों में कमी आ रही है। नैतिकता की कमी से उनमें अशिष्टता पैदा हो रही है। बच्चों में अनैतिकता का एक कारण अभिभावक अथवा माता पिता के पास बालक के लिये समय का न होना। वह तो उसके लिये धन एकत्रित करने में व्यस्त है, वह इस बात को समझ ही नहीं रहे है कि जिस बच्चे के लिये हम पैसे इकटठे कर रहे है, वह कहाँ जा रहा है। अपना बहुमूल्य समय अभिभावक बच्चों को न देने कारण भी बच्चे गलत राह पर चल पडते है। अभिभावकों की इसी गलती से बालक समय के साथ इतना बडा हो जाता है कि

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 4, April 2023
Impact Factor: 7.301

वह संस्कार विहीन हो जाता है। शिष्टाचार की उससे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती है।

2. समस्या शीर्षक

"माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना का तुलनात्मक अध्ययन (झाँसी जिले के विशेष सन्दर्भ में)"

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्यों का निर्धारिण किया गया है–

1. झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों में पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना का अध्ययन करना।
2. झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पना

1. झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.परिसीमा एवं न्यादर्श

1. प्रस्तुत शोध कार्य प्रस्तुत शोधकार्य उत्तर प्रदेश राज्य के झाँसी जिले से सम्बन्धित है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य हेतु तहसील मऊरानीपुर के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालय की कक्षा 9वी में अध्ययन छात्र छात्राओं को न्यादर्श रूप में चयनित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रदत्तों के संकलन के लिये स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

6. सम्बन्धित शोध कार्यो का पुनरावलोकन

योगजेन्द्र सिंग (2013) एवं कुमारी. पुषा (2016) ने माध्यमिक स्तर के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन, नैतिक मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, में सार्थक अन्तर पाया गया। नैतिक मूल्य के द्वितीय आयाम बेईमानी की प्रवृत्ति में उच्च वर्ग के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों मे सार्थक अन्तर पाया गया।

वर्मा एवं गुप्ता (2010) ने पाया कि बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर, परिवार के वातावरण का प्रभाव सकारात्मक रूप से पड़ता है।

गुप्ता एवं गुप्ता, (2010) द्वारा उच्च पारिवारिक वातावरण वाले छात्र व छात्रओं के नैतिक मूल्य–विनम्रता छात्र व छात्राओं के नैतिक ईमानदारी/लगनशीलता/ विनम्रता पर लिंग का कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि नैतिक मूल्य–मानवता में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च पारिवारिक वातावरण की छात्राओं में नैतिक मूल्य – मानवता, पर लिंग के प्रभाव संबंधी छात्रों की तुलना में उच्च पाये गये।

कपूर, अर्चना (2009) द्वारा अपने अध्ययन में पाया कि दोनो पारिवारिक परिवेशों अर्थात सकारात्मक एवं नकारात्मक में पलित बालकों में धार्मिक एवं प्रभुत्ववादी मूल्य अधिक है, जबकि बालिकाओं में सामाजिक, प्रजातान्त्रिक एवं ज्ञानात्मक मूल्य अधिक विकसित पाये गये है। नकारात्मक पारिवारिक परिवेश के बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में परिवार प्रतिष्ठा एवं सुखदायी मूल्य अधिक विकसित पाये गये।

उमेश कुमार, (2009) ने पारिवारिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में कक्षा ग्यारहवी के छात्रों के नैतिक मूल्य, छात्राओं में प्राप्त नैतिक मूल्यों से सार्थक रूप से निम्न पाया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 4, April 2023
Impact Factor: 7.301

कोष्ठा, लता व अन्य (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि पिछडे वर्ग के छात्रों के नैतिक मूल्य – ईमानदारी/मानवीयता पर सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

7. शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के झाँसी जिले की तहसील मऊरानीपुर अध्ययन के क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य तहसील मऊरानीपुर के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की कक्षा 9वी में अध्ययन छात्र छात्राओं के अध्ययन पर सम्पन्न किया गया है।

8. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध समस्या के वर्तमान हेतु उन्मुख होने के कारण तथा शाधार्थी के द्वारा अध्ययन के सम्पादन को प्राकृतिक तथा स्वाभाविक स्थिति में किये जाने के कारण अध्ययन के लिये शोध की सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें शोध की समस्या के वर्तमान उन्मुख होने के बावजूद अतीत की घटनाओं पर विचार किया जाना होता है। संमकों में प्राथमिक समंको में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया तथा द्वितीयक समंकों के रूप में सम्बन्धित क्षेत्रीय, एवं विद्यालयी अभिलेखों तथा प्रपत्रों को शामिल किया गया है।

9. शोध हेतु न्यादर्श

किसी भी शोध हेतु प्रदत्तों के एकत्रीकरण के न्यादर्शो का प्रतिचयन किया जाना आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु झाँसी जिले की तहसील मऊरानीपुर के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालय की कक्षा 9वी में अध्ययन 25 छात्र एवं 25 छात्राओं को यादृच्छिक प्रतिचयन प्रविधि द्वारा न्यादर्श रूप में चयनित किया गया है।

10. प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध हेतु परीक्षण विकसित करने एवं समंबों की व्याख्या करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके समंकों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार परिकल्पना का परीक्षण का परीक्षण कर निष्कर्ष को प्रतिपादित किया गया। प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियों के अन्तर्गत मध्यमान, माध्य विचलन, माध्य मानक विचलन, माध्य मानक त्रुटि एवं टी–परीक्षण को प्रयुक्त कर आवश्यकतानुसार दण्ड आरेख का निरूपण किया गया है।

सारणी क्रमांक – 1

झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना के अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र	विवरण	N	M	Sd	SEM	SED	t-value	p -value
1	अध्ययनरत छात्र	25	11.56	1.45	0.29	0.403	15.5772	< 0.0001
2	अध्ययनरत छात्रायें	25	17.84	1.40	0.28			

Df = N1+N2-2=48

$p<.05$ सार्थकता स्तर पर सार्थक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 4, April 2023
Impact Factor: 7.301

दण्ड आरेख – 1

झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना के अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण का दण्ड आरेख

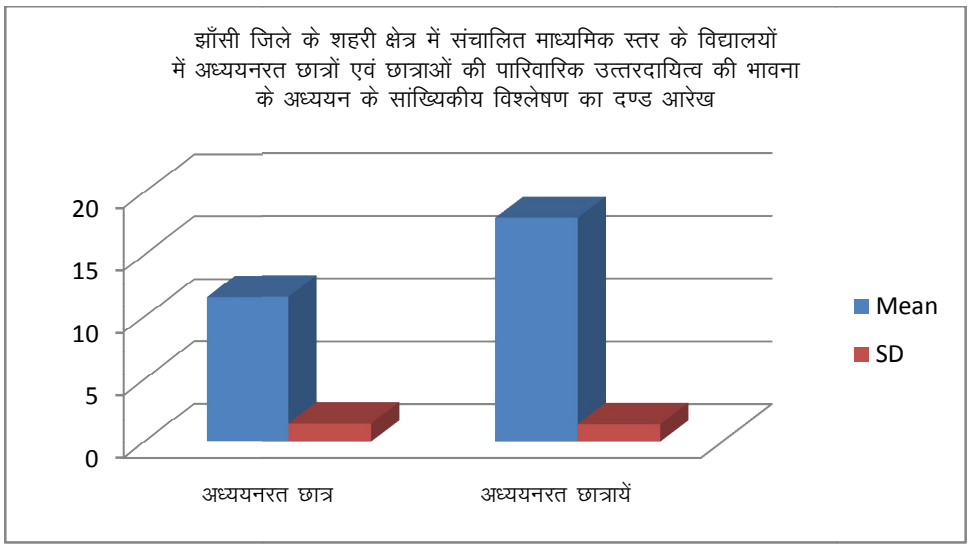

11. प्रदत्तों का विश्लेषण

सारणी क्रमांक – 1 के विश्लेषण से प्राप्त होता कि झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना के अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण में शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 11.56, माध्य विचलन 1.45 तथा माध्य मानक त्रुटि0.29 है, इसी तरह विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की पारिवारिक उत्तरदायित्व से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 17.84, माध्य विचलन 1.40 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.28 है। प्राप्त प्राप्तांकों के सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात होता है कि झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना के तुलनात्मक अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण में टी–परीक्षण मूल्य 15.5772 तथा पी–मूल्य < 0.0001पाया गया है, जो $p<.05$ सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

12. परिकल्पना का परीक्षण

सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता कि झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना के तुलनात्मक अध्ययन में विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना अध्ययनरत छात्राओं की तुलना में निम्न पायी गयी है, जबकि छात्राओं में पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना अपेक्षाकृत उच्च पायी गयी है। इसलिये पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना – 'झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है', को अस्वीकृत किया जाता है।

13. शोध निष्कर्ष

अध्ययन के परिणाम में पाया गया है कि झाँसी जिले के शहरी क्षेत्र में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना के तुलनात्मक अध्ययन में विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना कम पायी गयी है, जबकि अध्ययनरत छात्राओं में पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना अपेक्षाकृत उच्च पायी गयी है। 85 प्रतिशत छात्र विद्यालय से अतिरिक्त समय को परिवार एवं परिवार के कार्य करने की अपेक्षा मित्रों के साथ व्यतीत करना पसंद करते है, जबकि 94 प्रतिशत छात्रायें विद्यालय से अतिरिक्त समय को परिवार के साथ व्यतीत करती है। 79 प्रतिशत छात्र परिवार के छोटे सदस्यों को पढ़ाने अथवा पढ़ने में सहायता करते पाये गये जबकि 81 प्रतिशत छात्रायें अपनी पढ़ाई के साथ परिवार के छोटे सदस्यों अथवा आस–पड़ोस के छोटे बच्चों को पढ़ाई हेतु सहायता करती पायी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 4, April 2023
Impact Factor: 7.301

गयी। अनुशासनहीनता के सन्दर्भ में 71 प्रतिशत छात्र अनुशासन भंग करते पाये गये, जबकि 13 प्रतिशत छात्रायें अनुशासनहीनता से सम्बन्धित पायी गयी।

सन्दर्भ

1. अनमोल सिन्हा 2021, 'आधुनिकता बनाम प्राचीनता – एक समीक्षात्मक
2. अध्ययन',प्रकाशन शोध प्रपत्र, 2021,
3. अनिता चौरासे 2005, 'पाश्चात्य संस्कृति के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन', एम. फिल. जेजेटीयू, राजस्थान, 2005
4. अरूण कुमार सिंह. (2005), "उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान", मोतीलाल बनारसी दास प्रकाषन अकादमी, नई दिल्ली.
5. कपिल, एच. के. 'सांख्यिकी के मूलतत्व', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. Coontz, Horold and O. Deneel, Cyrill, 'Management", Newyork, McGraw Hill.
7. शर्मा, आर.ए., (1995) 'मानव मूल्य एवं शिक्षा', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. शर्मा, आर.के. व दुबे, श्रीकृष्ण (2007) 'मूल्यों का शिक्षण', राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
9. श्रीवास्तव, डी.एन., (नवीन संस्करण) 'सांख्यिकी एवं मापन', विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा।
10. योगजेन्द्र सिंग (2013), 'माध्यमिक स्तर के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन, नैतिक मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'।